DOI-10-53571/NJESR.2020.2.3.27-30

इक्कीसवीं सदी में हिन्दी

डॉ0 मौ0 इमरान खान
अध्यक्ष–हिन्दी विभाग
एम0जी0एम0 कालेज, सम्भल
mohdimranmgm@gmail.com

(Received:15 February 2020/Revised:25 Februray2020/Accepted:10March/Published:20 March 2020)

समाज के उद्‌भव और विकास में भाषा की महती भूमिका है। बिना भाषा के हम समाज की कल्पना ही नहीं कर सकते। जैसे हम कह सकते हैं कि ''जल है तो कल है'' वैसे ही भाषा है तो समाज है और समाज है तो मनुष्य का जीवन है, और जीवन है तो मनुष्य अवश्य ही उन्नति और विकास के मार्ग को प्रशस्त करेगा। मेरा तो मानना है कि संसार का कोई भी बडे से बडा या छोटे से छोटा आन्दोलन रहा हो, भाषा के अभाव में उसकी कल्पना ही नही की जा सकती। आज हम आजादी की जिस खुली हवा में सांस ले रहें हैं। उस स्वतन्त्रता आन्दोलन को धार देने एवं उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में समकालीन साहित्यकारों ने अपने साहित्य एवं पत्र पत्रिकाओं में हिन्दी भाषा के माध्यम से जनसामान्य में एक ज्योति जागृत कर उनके अन्दर उत्साह का संचार किया ।''यदि आप यह मानते है कि मनुष्य का सृजन किसी आध्यात्मिक शक्ति ने किया है तो सम्भवतः आपको यह भी विश्वास होगा कि भाषा की रचना ईश्वर ने की है''[1]। इसलिए कुछ विद्धानों ने इसे देववाणी नाम से भी अभिव्यक्त किया है। मनुष्य ध्वनि संकेतो से काम लेते हुए उन्हें बराबर किसी अनुशासन या व्यवस्था द्वारा संचालित करता है। हिन्दी में यदि किसी अंग्रेजी के शब्द का व्यवहार करें तो वह हमारी वाक्य रचना के नियम के अन्तर्गत प्रयुक्त होगा। कर्ता, क्रिया, विशेषण आदि के स्थान निश्चित है हिन्दी में सम्बन्ध वाचक शब्द सदा प्रकृति के बाद आयेगा। अंग्रेजी की तरह पहले नहीं। इन सब बातों का सम्बन्ध समाज विशेष की चिन्तन प्रक्रिया से है। ''यह चिन्तन क्रिया जब भाषा के क्षेत्र में प्रकट होती है, तो उसे हम भाषा की भाव प्रकृति कहते है।''[2]

भाषा हमें सभ्यता एवं संस्कृति का बोध कराने वाली एक प्रक्रिया है इसलिए उसे सभ्यता एवं संस्कृति का अंग मानना चाहिए। भाषा की मुख्य सम्पत्ति है–उसका अपना शब्द भण्डार। शब्द भण्डार में जिन शब्दों का सम्बन्ध मनुष्य के प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश से है जो उसकी नित्यप्रति की आर्थिक और सांस्कृतिक कार्यवाही में काम आते हैं। **वी0ई0 नीगस** इंग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध शरीर वैज्ञानिक है।

उन्होंने पशुओं द्वारा ध्वनि संकेतो के प्रयोग की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा है– ''बहुत से पशु ऐसी ध्वनियाँ करते हैं जिनसे भाषा का विशद शब्द भण्डार बन सके, लेकिन उनको बद्धिं नही है कि वे इस क्षमता से लाभ उठायें जैसे कि मनुष्य उठाता है''।[3] इस धारणा के अनुसार मनुष्य ही उसके विकास का परिणाम नहीं है वरन् उसका विकास उसकी बुद्धि का परिणाम है, और यह सब भाषा के प्रभाव के कारण हुआ ।

हिन्दी को अपनी विकास अवस्था तक पहुँचाने के लिए अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ा। हिन्दी का यह विकास पिछले सहस्रों वर्षो की प्रक्रिया है। इसलिए विभिन्न रूपों की दृष्टि से विभिन्न नाम दिये गये। हिन्दी के कई अन्य नाम जो समय–समय पर प्रचलित हुए हैं– हिन्दवी, रेखता, रेखती, दक्खिनी, गूजरी, खड़ीबोली, हिन्दुस्तानी, आर्यभाषा और राष्ट्रभाषा आदि ऐसे नाम हैं। डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार–''हिन्दुवी अथवा हिन्दवी पश्चिमी हिन्दी बोलियों से विकसित है तथा मुसलमनों की पंजाबी भाषा से प्रभावित एक अदृष्ट रूप से निर्मित हुई है। इसका व्यवहार दिल्ली के बाजारों में स्वभवतः होता था''।[4] अनेक विदेशी विद्धानो ने भी हिन्दी के प्रति विशेष प्रेम तो प्रदर्शित ही नहीं किया बल्कि उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस सन्दर्भ में फ्रांस, इंग्लैण्ड, रूस, चेक, वेलजियम आदि भिन्न–भिन्न देशों के निवासी जैसे ग्रार्सा द तासी, जॉनगिल क्राइस्ट, ग्रियर्सन, फ्रेडरिक पिकांट, ग्राउसेवार निन्कोव, ओदोलेन स्मेकल, फादर कामिल बुल्के आदि के नाम अविस्मरणीय है। इनमें से कुछ ने हिन्दी को तो कुछ ने हिन्दुस्तानी को महत्व दिया। ''संसार के भाषा समूहों में भारत यूरोपीय कुल के भारत–ईरानी उपकुल में भारतीय आर्यशाखा की आधुनिक भाषाओं में से एक मुख्य भाषा हिन्दी है''।[5]

वर्तमान समय में हिन्दी की हालत पर एक बात और ध्यान में रखने योग्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में विवाद रहा है। यह विवाद भाषा का न होकर भाषियों का रहा है। कई राज्यों ने हिन्दी का हमेशा से विरोध किया है। भाषा के नाम पर आन्दोलन चले है। सिर्फ यही नहीं महाराष्ट्र , बंगाल अदि राज्यों में हिन्दी भाषियों के साथ मार–पीट की घटनायें प्रकाश में आती रही है। चाहे वह महाराष्ट्र की नव निर्माण सेना द्वारा हिन्दी भाषियों को पीटना हो या असम में उल्फा द्वारा निर्मम हत्या । रोज़–रोज़ भाषा के नाम पर नये राज्यों की मांग करना राजनीतिज्ञों को अपनी राजनीति चमकाने के लिए प्रमुख मुद्दा है।

उपर्युक्त पैराग्राफ में जो बात कही गयी है वह एक कटु सत्य है, लेकिन फिर भी न हिन्दी और न ही हिन्दी भाषी इस बात से तनिक विचलित हुए, अपितु भाषा अपना उत्तरोत्तर विकास के मार्ग को प्रशस्त करती गई। क्योंकि हिन्दी अपने आप में एक समर्थ भाषा है प्रकृति ने इसे उदार ग्रहणशील सहिष्णु और भारत की राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका है।

21वीं सदीं में जहाँ हिन्दी विश्व भाषा बनने के लिए निरन्तर कदम बढ़ा रही है। वही दूसरी ओर भारतीय उच्च वर्ग एवं भारतीय राजनीति के कुछ बडे नेताओं के मन यह बात घर कर गई है कि हिन्दी अनपढ़ गरीब व मजदूरों की भाषा है। इसका एक प्रमाण यह भी है कि गरीब मजदूर का बच्च सरकारी प्राथमिक विद्यालय में। जबकि उच्च धनी वर्ग व अधिकाँशतः राजनेताओं के बच्चे अच्छें अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं। श्री **सुखवंत सिंह** ने कहा था कि ''हिन्दुस्तान में हिन्दी गरीबों की भाषा है। क्योंकि इन्ही अल्पधनी परिवारों में ही हिन्दी का भविष्य निर्भर है।''

21वीं सदी में हिन्दी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास बहुत तेजी के साथ हुआ है। वेब विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिन्दी की मांग जिस तीव्रता के साथ बढ़ रही है उतनी किसी और भाषा की नहीं। विश्व के लगभग 165 विश्वविद्यालयों/संस्थानों में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी का अध्यापन हो रहा है। कुछ स्थानों पर हिन्दी अध्यापन के कार्यक्रम प्रारंभिक स्तर पर चलाए जा रहें हैं। कुछ विश्वविद्यालयों में शोध स्तर पर विदेशों से 25 से अधिक पत्र–पत्रिकायें लगभग नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित हो रही है। यूएई के ''**हम एफ एम**'' सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे, जिनमें **बी बी सी,** जर्मन के **डायचेवले,** जापान के **एन एच के बर्ल्ड** और चीन के **चाईना रेडियों इंटरनेशनल** की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

21वीं शताब्दी में विश्व में हिन्दी की स्थिति पर चर्चा करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है। कि प्रयोगताओं की संख्या के आधार पर 1952 में हिन्दी विश्व में पांचवे स्थान पर थी। 1980 ई0 के आस–पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई। 1991 की जनगणना में हिन्दी को मातृभाषा घोषित करने वालो की संख्या के आधार पर पाया गया कि यह पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से अधिक है। इतना ही नहीं **डॉ0 जयंती प्रसद नौटियाल** ने निरंतर 20 वर्षो तक भारत तथा विश्व में भाषाओं सबंधी आंकडों का विश्लेषण करके सिद्ध कर दिया कि ''विश्व में हिन्दी प्रयोग करने वालों

की संख्या चीनी से भी अधिक है और अब हिन्दी प्रथम स्थान पर है। उसने विश्व की अंग्रेजी समेंत अन्यसभी भाषाओं को पीछे छोड दिया है।'' **प्रो0 महावीर सरन जैन** ने अपने आलेख ''संयुक्त राष्ट्रसंघ की अधिकारिक भाषाएं एवं हिन्दी'' में विश्व स्तरीय सन्दर्भ ग्रन्थों से प्रमाण प्रस्तुत करते हुए प्रतिपादित किया है कि मातृभाषियों की संख्या दृष्टि से विश्व में चीनी भाषा के बाद हिन्दी बोलने वाले सर्वाधिक है। मेरे विचार से इस बात से कोई फर्क नही पड़ता कि हिन्दी विश्व स्तर पर प्रथम स्थान पर है या द्वितीय। हम भारतीय के लिए गर्व की बात तो यह है कि हिन्दी विश्व पटल पर अपनी सार्थकता सिद्ध कर चुकी है। संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनना औपचारिकता मात्र है।

21वीं सदी में हिन्दी विश्व बाजार पर छा गयी है। भारत में उदारीकरण वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई । इसके परिणाम स्वरूप अनेक विदशी कंपनिया भारत आ रही है। मगर इन सबकों विवश होकर हिन्दी की ओर मुड़ना पड रहा है, क्योंकि इन्हें अपनी दर्शक संख्या बढ़ानी है। अवना व्यापार अपना लाभ बढाना है। आज टी0वी0 चैनलों एवं मनोरंजन की दुनिया में हिन्दी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा है। कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिन्दी माध्यम है।

जिन सेटेलाइट चैनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरम्भ केवल अंग्रेजी भाषा से किया था। उन्हें अपनी भाषा नीति में परिवर्तन करना पड़ा। अब **स्टार प्लस, जी0टी0वी0, स्टार न्यूज, जी न्यूज, डिस्क्वरी, नेशनल ज्योग्राफी** आदि चैनल आपने कार्यक्रम हिन्दी में दे रहें है। **केबीसी** की लोकप्रियता ने मीडिया के क्षेत्र में हिन्दी के झंडे गाढ़ दिए, कमाई तथा प्रसिद्धि के अनेक कीर्तिमान भंग कर दिये हैं। आज सभी चैनल तथा फिल्म निर्माता अंग्रेजी कार्यक्रमों और फिल्मों को हिन्दी डब करके प्रस्तुत करने लगे है। **जुरासिक पार्क** जैसी अति प्रसिद्ध फिल्मों को भी अधिक मुनाफे के लिए हिन्दी में डब किया गया।

अन्ततः मैं केवल यही कहूँगा कि 21वीं शताब्दी हिन्दी की ही सदी है। भूमण्डलीकरण के इस दौर में हिन्दी का ही बोलबाला है। वह विश्व में बहुत ही मजबूती से अपनी पकड एवं पैठ बना रही है, क्योंकि सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 21वीं शताब्दी में वह भाषा केवल हिन्दी ही हैं जिसके पास अपनी सरलता ग्राह्यता एवं सार्थकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. **डॉ0 राम विलास शर्मा– भाषा और समाज संस्करण 1989, भूमिका से।**
2. **बी0ई0 नीगस–द कम्पैरेटिव एंड फिजियौलौजी ऑफ द लैरिन्क्स, लन्दन 1949 पृ0 127।**
3. **सुनीति कुमार चटर्जी –भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी। पृ0 205**
4. **डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा–हिन्दी भाषा का इतिहास पृ0 11**